SHRI KALURAM BAMNIYA

Shri Kaluram Bamniya a renowed singer of Kabir Bhajans.

2. Born on 20 January,1970 at village Kanheriya in Dewas District of MP, Shri Kaluram Bamniya parents were marginal farmers & agricultural labourers. The practice of occasionally singing bhajans at night at the choupal after work was part of the family culture. As a child he was attracted and picked up a liking to these bhajans.He absorbed and learnt from his father and grandfather. He would initially accompany them on the *manjira* and later began singing from the age of nine.

3. Shri Kaluram was able to study only up to class 3 at the village school. Later in life he attended adult education classes and completed the basic literacy course. Given the family situation he was compelled to labour, tending cattle, from a tender age of twelve. At the age of thirteen he came in contact with Ram Nivas ji Rao of Sawai Madhopur. He ran away to Rajasthan where he worked at a hotel during the day and learnt bhajans at night. He later came back to his village and worked for fourteen years almost as a bonded labourer. He was attached as a "Hali" to various families in the region to support the family.He primarily sings Kabir Bhajans along with bhajans of Mirabai and Goraknath in the local Malwi dialect.

4. Shri Kaluram has been performing at villages in the region for a long time in village functions, family occasions, local government functions etc. Over the past two decades he has also been performing at various forums outside Malwa region. Some of these were: 'Aao Saadho' at India International Center, New Delhi; 'Samarpan' at Bhubaneshwar; 'Kabir'Nirantara Raag Utsava at Mysuru; 'Kabir Vani', Vasantutsava at Pune & 'Kabir Sadhana' at Kalachaya Cultural Center, Pune; 'Kabir Festival' at Embassy of India, Kathmandu, Nepal; Third Gorakhpur Film Festival; ' Lok Kala Manch' New Delhi; 'Kabir Sangeet', NCERT, New Delhi; 'Ekai Ram Rahim-Bhajan Sandhya', Bharat Bhavan, Bhopal; 'Kabir Vani', Indore Literature Festival; Universities such as Ashoka, AIIMS Rishikesh, Azim Premji University and others.He has been a Akashvani radio artist and his recordings have been broadcasted by various channels of both radio & television. He has featured in documentaries made on Kabir.

5. Shri Kaluram has been an active member of the Kabir Bhajan & Vichar Manch, Dewas encouraging and participating with other local singers. He has worked on many small projects to actively train women & children of the region. His base in the folk tradition of Malwa remains strong even while he travels across many regions.

6. Shri Kaluram has received awards from Nehru Yuwa Kendra and Sports and Youth Welfare Society M.P., among others. He has also received 'Rashtriya Tulsi Award', by Government of MP; 'Kabir Kohinoor Puraskar', Nagor, Rajasthan; and 'Bheraji Samman', Ujjain.

श्री कालूराम बामनिया

श्री कालूराम बामनिया कबीर भजन के प्रसिद्ध गायक हैं।

2. 20 जनवरी 1970 को मध्य प्रदेश के देवास जिले के कन्हेरिया गांव में जन्मे श्री कालूराम बामनिया के माता–पिता सीमांत किसान और खेतिहर मजदूर थे। काम के बाद रात में कभी–कभी चौपाल पर भजन गाने की प्रथा पारिवारिक संस्कृति का हिस्सा थी। बचपन में वह इन भजनों की तरफ आकर्षित हुए और उन्हें पसंद करने लगे। उन्होंने अपने पिता और दादा से इसे आत्मसात किया और सीखा। वह शुरू में मंजीरे पर उनके साथ संगत करते थे और बाद में नौ साल की उम्र से गाना शुरू कर दिया।

3. श्री कालूराम गांव के स्कूल में केवल तीसरी कक्षा तक ही पढ़ पाए। बाद के जीवन में उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाओं में प्रारंभिक साक्षरता हासिल की। पारिवारिक स्थिति को देखते हुए उन्हें बारह वर्ष की छोटी उम्र से ही मजदूरी करने और मवेशियों की देखभाल करने के लिए मजबूर होना पड़ा। तेरह वर्ष की आयु में वे सवाई माधोपुर के रामनिवास जी राव के संपर्क में आये। वह भाग कर राजस्थान चले गए जहां वह दिन में एक होटल में काम करते थे और रात में भजन सीखते थे। बाद में वह अपने गांव वापस आ गए और लगभग चौदह वर्षों तक बंधुआ मजदूर के रूप में काम किया। परिवार का भरण–पोषण करने के लिए वह इलाके के विभिन्न परिवारों में "हाली" के रूप में काम करते थे। वह स्थानीय मालवी बोली में मीराबाई और गोरखनाथ के भजनों के साथ–साथ मुख्य रूप से कबीर भजन गाते हैं।

4. श्री कालूराम इलाके के गांवों में लंबे समय से ग्रामीण समारोह, पारिवारिक अवसरों, स्थानीय सरकारी समारोह आदि में गाते रहे हैं। पिछले दो दशकों से वे मालवा क्षेत्र के बाहर भी विभिन्न मंचों पर प्रदर्शन करते रहे हैं जिनमें से कुछ हैं: इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में 'आओ साधो'; भुवनेश्वर में 'समर्पण'; मैसूर में 'कबीर' निरंतर राग उत्सव; पुणे में 'कबीर वाणी', वसंतोत्सव और कालछाया सांस्कृतिक केंद्र, पुणे में 'कबीर साधना'; भारतीय दूतावास, काठमांडू, नेपाल में 'कबीर महोत्सव'; तीसरे गोरखपुर फिल्म महोत्सव; 'लोक कला मंच' नई दिल्ली; 'कबीर संगीत', एनसीईआरटी, नई दिल्ली; 'एकै राम रहीम–भजन संध्या', भारत भवन, भोपाल; 'कबीर वाणी', इंदौर साहित्य महोत्सव; अशोका, एआईआईएमएस ऋषिकेश, अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय आदि। वह एक आकाशवाणी रेडियो कलाकार रहे हैं और उनकी रिकॉर्डिंग रेडियो और टेलीविजन दोनों के विभिन्न चैनलों द्वारा प्रसारित की गई हैं। उन्होंने कबीर पर बनी डॉक्यूमेंट्री में अभिनय किया है।

5. श्री कालूराम कबीर भजन एवं विचार मंच, देवास के सक्रिय सदस्य रहे हैं। वह अन्य स्थानीय गायकों को प्रोत्साहित करते रहे हैं और उनके साथ भाग लेते रहे हैं। उन्होंने क्षेत्र की महिलाओं और बच्चों को सक्रिय रूप से प्रशिक्षित करने के लिए कई छोटी–मोटी परियोजनाओं पर काम किया है। कई क्षेत्रों की यात्रा करते हुए भी मालवा की लोक परंपरा में उनकी मौलिकता मजबूत बनी हुई है।

6. श्री कालूराम को नेहरू युवा केंद्र और खेल एवं युवा कल्याण सोसायटी मध्य प्रदेश सहित अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय तुलसी पुरस्कार'; नागौर, राजस्थान का 'कबीर कोहिनूर पुरस्कार'; और उज्जैन का 'भेराजी सम्मान', भी प्राप्त हुआ है।